**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 02-04-2023, Accepted: 17-04-2023, Published: 02-05-2023**
**Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 3-5**

# वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य और मीडिया

**सुप्रिया**
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा, भारत

**सारांश**
वैश्वीकरण के युग में मीडिया और साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में अंग्रेजी और चीनी के बाद हिन्दी का स्थान आता है। वैश्वीकरण ने सम्पूर्ण संसार को एक परिवार के रूप में परिवर्तित कर दिया है। वैश्वीकरण का प्रभाव साहित्य, मीडिया, संस्कृति, कला, भाषा आदि पर व्यापक स्तर पर पड़ रहा है। हिन्दी भाषा पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। हिन्दी विश्व के लगभग 90 देशों में अपना स्थान बना चुकी है। हिन्दी के महत्व को समझते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया, सउदी अमीरात, कुवैत, मॉरिशस, मलेशिया, कनाडा, फ्रांस, बांग्लादेश, नेपाल, बहरीन आदि ने अपनी शिक्षा नीति में हिन्दी को पाठ्यक्रम में शामिल किया है। वर्तमान युग कम्पयूटर और मीडिया का युग है। जैसे–जैसे इनका विकास हो रहा है वैसे ही हिन्दी भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज हम देखते है कि भारत में ही नहीं बल्कि अन्य कई देशों में भी भारतीय फिल्में, गाने, नाटक और यहाँ के फिल्मी कलाकार खूब पसन्द किए जाते हे। हिन्दी फिल्में विदेशी जमी पर रिकार्ड कमाई कर रही है। साहित्य ने भी हिन्दी को विदेशों में प्रतिष्ठा दिलाई है।
वैश्वीकरण के लिए भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण और बाजारवाद आदि नामों का प्रयोग किया जाता है। इसकी अवधारणा पूरे विश्व को एक गाँव में तब्दील करने की है जिसने पूरी दुनिया की तस्वीर ही बदल दी है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के आरंभिक दौर में भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा था परंतु धीरे–धीरे उसकी गति धीमी होती गई। वैश्वीकरण में जहाँएक तरफ मुक्त बाजार की दलीलें पेश की गई वहीं दूसरी ओर दुनिया में एक नई उपभोक्ता संस्कृति को भी जन्म दिया। आजकल संयुक्त राष्ट्र और विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी को सुमार करने की ठोस दलीले दी जा रही है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन भी एक ऐतिहासिक परिवर्तन की आहट है।
वर्तमान समाज मीडिया के नये युग में जी रहा है। वैज्ञानिक तकनीकों ने मीडिया के परंपरागत स्वरूप को व्यापक रूप में बदला है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है और आज को सोशल मीडिया पत्रकारिता और साहित्य दोनों को विस्तार देने में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। तकनीकी विकास ने जिस गति से मीडिया के स्वरूप को बदला है, उसी गति से हिन्दी साहित्य के आंतरिक और बाह्य स्वरूप को भी। आज मीडिया के द्वारा ही हिन्दी साहित्य का विस्तार दुनिया भर में हो रहा है। सूचना तकनीक के इस नए युग से पहले साहित्य का स्वरूप किताबों और पत्र–पत्रिकाओं तक ही सीमित था, परंतु आज साहित्य किताबों से आगे मीडिया के अनगिनत साधनों पर उपलब्ध है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी में जनसंचार माध्यम नए विकास के आयाम को छू रहें है। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी भाषा एवं साहित्य भी नई–नई चुनौतियों का सामना करने के लिए शक्तियों का अर्जन कर रहे हैं।

**मूल शब्दः** वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य, साहित्य और मीडिया

वैश्वीकरण के इस दौर में साहित्य और मीडिया की भूमिका जनसामान्य में अति महत्वपूर्ण है। मीडिया और साहित्य समाज की एक शक्ति के रूप में उभर रहे है। वैश्वीकरण की गाड़ी पर सवार होकर मीडिया और साहित्य ने अपनी पहुँच और असर देश की करोड़ो जनता तक बनाने में सफलता पाई है। सभ्यता के विकास के साथ ही वैश्वीकरण और मीडिया एक प्रक्रिया के रूप में बहुत मंद गति से आगे बढ़ रहे थे जिससे साहित्य भी घर–घर तक नहीं पहुँचा था लेकिन पिछले दो दशकों में भारत के मीडिया में हुए बदलाव किसी क्रांति से कम नहीं रहे और वैश्वीकरण व मीडिया की वजह से साहित्य का जो असर भारतीय समाज पर पड़ा वैसा पहले कभी नहीं पड़ा था।

## वैश्वीकरण और मीडिया

वैश्वीकरण के लिए अंग्रेजी में 'ग्लोबलाईजेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है, इसे भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण व बाजारवाद आदि भी कहा जाता है । भारत में इसकी शुरूआत 1990 के दशक में हुई थी। वैश्वीकरण के इस युग में न कोई सीमा, सरहद या कोई दीवार नहीं हैं अपितु यह 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना लिए हुए है। डॉ0 माधव सोनटक्के वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए लिखते है ''वैश्वीकरण अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में स्थित मनुष्य जाति का अपने क्षेत्र, जाति, धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्र के सीमित दायरे से निकलकर विश्वमानक के रूप में विस्तार''[1] वैश्वीकरण विश्व के लोगों, सरकारों और कंपनियों के बीच एकीकरण की प्रक्रिया का नाम है। इस प्रक्रिया ने समूचे विश्व को एकजुट किया हे। भौगोलिक दूरियाँ कम हुई है, लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, मनोरंजन, सामाजिक, राजनीतिक मुद्दे, आर्थिक परिस्थितियों व विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृति के प्रति जागरूक हुए है। निश्चित रूप से भूमण्डलीयकरण ने समाज के प्रत्येक हिस्से में बदलाव किए है।
वैश्वीकरण के इस सघन समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्त्रोत व आधुनिकता के मूल्यों का वाहक माना जा रहा है। मीडिया का अर्थ है मीडियम या माध्यम। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। मीडिया जनसाधारण की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है। मीडिया के विभिन्न रूप हैः–

### 1. प्रिंट मीडिया

समाचार पत्र, पत्रिकाएं, अनुवाद कार्य, संपादन, फोटाग्राफी आदि।

### 2. इलैक्ट्रानिक मीडिया

रेडियो, टी.वी., फिल्म निर्माण, ऐनिमेशन, मल्टीमीडिया आदि।

**3. अन्य क्षेत्र–** विज्ञापन, जनसंपर्क आदि।

वैश्वीकरण के युग में मीडिया जहाँ असंख्य विमर्शों को स्थान देता है वहीं मीडिया की भूमिका भी विमर्श का एक विषय है। मीडिया आज तक बड़े विश्वव्यापी उद्योग का रूप ले चुका है। अगर कोई उद्योग विश्वव्यापी होता है तो निश्चित ही उसका हित व सरोकार भी विश्वव्यापी हो जाता है। आज मीडिया मात्र सूचना देने और घटनाओं का विश्लेषण करना ही नहीं बल्कि हमारी समझ और रूचि को दिशा देने व बदलने के गंभीर काम में लगा है। यह केवल राजनीतिक विचारधाराओं के प्रचार तक सीमित नहीं रहकर, संस्कृतियों और सभ्यताओं को नए अर्थ व दिशा देने में लगा हुआ है। मीडिया और वैश्वीकरण एक–दूसरे से गहरे तौर पर जुड़े हुए है। अलग–अलग चलते हुए भी दोनों एक दूसरे से खुराक पाते है और दोनों मिलकर इंसानी अस्तित्व पर गहरा असर डाल रहे है। रामगोपाल सिंह अपनी किताब 'वैश्वीकरण, मीडिया और समाज' में वैश्वीकरण और उससे मीडिया में आए बदलाव पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है कि वैश्वीकरण और मीडिया की वजह से समाज में विरोधाभास और अंतरद्वंद पैदा हुए है। विकास और आधुनिकता से नए पैमाने गढ़े गए है। जो अपने आप में बेमानी है। उनका ऐसा कहना भी ठीक लगता है क्योकि जब हम दो दशक बाद वैश्वीकरण और मीडिया के प्रभाव का आंकलन करते है तो पाते है कि जो उम्मीद वैश्वीकरण व मीडिया से की गई थी वो पूरी होते नहीं दिख रही। हम आधुनिकता और विकास की दौड़ में एक अलग ही दिशा में निकल गए है और सभ्यता व मानव जाति के विकास में मीडिया हमारी मदद करता भी नजर नहीं आ रहा।

## वैश्वीकरण और हिन्दी साहित्य

विश्व बाजार के साथ एक नई उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हुआ है। जिसका प्रभाव देश की भाषा, संस्कृति, साहित्य व समाज पर देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के दौर में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी भाषा भारत की जनभाषा, संपर्क भाषा व राष्ट्र भाषा है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी विश्व के अनेक देशों में बोली व पढ़ी जाती है।

ब्रिटेन, अमेरिका, फिजी, कनाडा, जर्मनी, स्वीडन, रूस, सुरीनाम आदि देशो में हिन्दी का अध्ययन व अध्यापन हो रहा है। हिन्दी का और अधिक प्रचार–प्रसार करने व समृद्ध बनाने के लिए मॉरिशस, दिल्ली, त्रिनिदाद, लंदन, सुरीनाम, जोहान्सबर्ग आदि में विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके है। ''आज हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गरिमा को आलोकित करने के लिए 500 से ऊपर पत्र–पत्रिकाएँ छप रही है। विभिन्न विषयों पर हिन्दी में रोज 20 किताबें छपकर बाजार में आ जाती है। दुनिया का कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर हिन्दी भाषा की दो–चार पुस्तकें उपलब्ध न हो।''[2]

हिन्दी भाषा का साहित्य भी आज विविध विधाओं के माध्यम से विश्व फलक पर अपना स्थान बना रहा है। उत्कृष लेखन व हिंदीतर साहित्य का अनुवाद इस भाषा के वैश्विक स्वरूप को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है जो भूमडलीकरण के कारण संभव हुआ है। वैश्वीकरण ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी साहित्य को विश्व स्तर तक प्रचार–प्रसार किया और हिन्दी लेखकों के विचारों में भी बदलाव आया है। हिन्दी भाषा के रूपों में न चाहते हुए भी विभिन्न भाषाओं के रूप आ गए है। खुली कविताएँ, छोटी कहानियाँ, लय मुक्त दोहे, उपन्यासों में आ रही कमी, शब्दों में हलकापन, हिन्दी भाषा की कहानियों में लंबी–लंबी अंग्रेजी की लाईने आदि आधुनिकीकरण की वजह से ही है। रचनाओं को जी–जान लगा देकर लिखने की प्रक्रिया आज लगभग समाप्त ही हो गई है। आधुनिकता के कारण भाषा में अब वह वजन नहीं रह गया है जो साहित्य में गंभीरता, सौन्दर्य व जीवन के निकट लाए। भाषा में मर्यादा की अब कोई सीमारेखा नहीं रह गई है। आम बोलचाल से लेकर सोशल मीडिया, साहित्य व फिल्मों में भी चलताऊ शब्दों का प्रयोग होने लगा है। भाषा के हल्केपन से साहित्य में भी हल्कापन आ गया है। वैश्वीकरण ने मानव को भावहीन बना उसे साहित्य की अपेक्षा बाजार की ओर धकेल दिया है जिससे उसका व्यवसायकरण हो गया है। आज बाजार व विज्ञापनों में प्रसिद्धि, मुनाफा, स्पर्धा, बाहरी दिखावा जैसे गुण प्रमुख हो गये है और दया, धर्म, करूणा, धैर्य इत्यादि मानवीय मूल्य गौण हो गये है। निश्चित रूप से वैश्वीकरण की वजह से हिन्दी साहित्य से संबंधित विभिन्न रूप से वैश्वीकरण की वजह से हिन्दी साहित्य से संबंधित विभिन्न रूप और उनसे संबंधित सामग्री भी प्रचुर मात्रा में मिल रही है। किन्तु इसने हिन्दी भाषा की गुणवता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। इस बात से कदापि इन्कार भी नहीं किया जा सकता है कि वैश्वीकरण ने विश्व स्तर पर विचारों, घटनाओं एवं सूचनाओं हेतू एक मंच तैयार कर दिया है और वैश्वीकरण के कारण हिन्दी भाषा को भी एक बाजार प्राप्त हुआ है। हिन्दी ने पूरे विश्व में अपनी जगह बनाई है। विदेशों में अनेक संस्थानों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, बोली जाती है और विदेशों में हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है।

आज हिन्दी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा ज्ञान, शिक्षा, परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है। इंटरनेट और वेबसाईट की सुविधा ने पत्र व पत्रिकाओं के ई–संस्करण तथा ऑनलाईन पत्र–पत्रिकाएं व पुस्तकें उपलब्ध कराकर ई–दुनिया के दरवाजे खोल दिए है। यही कारण है कि आज हिन्दी की अनेक पुस्तकें कहीं भी और कभी भी सुलभ उपलब्ध हो जाती है और इंटरनेट पर हिन्दी में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है।

## मीडिया और हिन्दी साहित्य

जैसे–जैसे संचार साधनों में विकास हुआ है वैसे ही हिन्दी साहित्य ने भी विकास किया है। आज मीडिया के द्वारा ही हिन्दी साहित्य का विस्तार दुनिया भर में हो रहा है। प्रत्येक तकनीक की अपनी सीमाएं होती है वैसे ही मीडिया की भी अपनी सीमाएं रही है। मीडिया में जहां संवाद एकतरफा होता है, वहाँ सूचनाएँ सिर्फ जाती है, जाती नहीं है। इसी एकतरफा संवाद परंपरा को सोशल मीडिया ने तोड़ा है। सोशल मीडिया, मीडिया का विकसित और संवर्धित अगला चरण है। वर्तमान में मीडिया का यही रूप प्रसिद्ध है। इसको 'न्यू मीडिया का नाम देकर संबोधित किया जाता है। सोशल मीडिया के दर्जनों साधन फेसबुक, वाहटसएप्प, ट्विटर, इंस्टाग्राम, मैसेंजर, यूटयूब आदि सोशल वेबसाईट आज लोगों के लिए ऐसे माध्यम है जहां वे अपनी बात मजबूती से दूसरों को सामने रख सकते है। आज का सोशल मीडिया मुख्यधारा के मीडिया को मजबूती प्रदान कर रहा है जिसने मीडिया के पंरपरागत स्वरूप कसे बिल्कुल बदल दिया है। आज सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया है। यह सिर्फ लिखने की ही आजादी नहीं प्रदान कर रहा बल्कि व्यक्ति को सम्पूर्ण अभिव्यक्ति की आजादी भी देता है। तकनीकी विकास ने जिस गति से मीडिया को स्वरूप को बदला है उसी गति से हिन्दी साहित्य के आंतरिक व बाहरी स्वरूप को भी। '' न्यू मीडिया में समकालीन हिन्दी साहित्य की पहुँच विश्व के हर उस हिस्से तक हो गई है। जहां पर इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी साहित्य का सृजनकर्ता साहित्यकार या पाठक मौजूद है और यही कारण है कि समकालीन हिन्दी साहित्य विश्व के तमाम देशों में लिखा जा रहा है''।[3]

मीडिया के इस वर्तमान दौर में हिन्दी साहित्य की पहुंच साहित्य प्रेमियों तक पहले से कहीं अधिक सुगम हुआ है। मीडिया के द्वारा साहित्य को केवल पढ़ा ही नहीं जाता बल्कि उसका

ऑडियो और वीडियो सामग्री का निर्माण कर उसे एक बड़े पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। अब साहित्य सिर्फ प्रकाशन संस्थान और पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रहा है। 21वीं सदी का साहित्य पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तको से निकल कर इंटरनेट पर पहुंच बना चुका है। आज फेसबुक, व्हाटसएप्प ब्लॉग, वेब पेज और अनगिनत साहित्यिक ई–पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य नये रूप में अवतरित हुआ। समय के साथ वैज्ञानिक तकनीकों ने विकास किया है और मानव को उन तकनीकों से सामंजस्य बैठाना पड़ा है आज नई तकनीकों से तालमेल बैठाकर मीडिया साहित्य को आगे बढ़ा रहा है। मीडिया पर किसी भी साहित्यिक गतिविधि की जानकारी पलक झपकते ही दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में पहुंच जाती है। आज जहाँ साहित्यिक गोष्ठियों और गतिविधियों का प्रिंट, वीडियो और ऑडियों विभिन्न वेबसाईट पर उपलब्ध है जिससे पाठ घर बैठे उन्हें पढ़, सुन व देख सकता है। आज मीडिया उन युवा लेखकों का भी सपना साकार कर रहा है, जिनकी वर्षों से यह इच्छा रही है कि उनकी रचनाएँ भी साहित्यिक पत्रिकाओं में छपे और उनकी रचनाओं को लोग पढ़ें। आज भारतीय भाषाओं की सैकड़ों ई–पत्रिकाएं उन हजारों लेखकों को यह मौका दे रही है। साहित्य के पाठक, विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक सभी मीडिया का प्रयोग लेखन व अध्ययन के लिए कर रहे है। आज मीडिया पर तो युवा साहित्यकारों की बाढ़ सी आ गई है। मीडिया ने साहित्य का बाजारीकरण करने का भी कार्य किया है।

बाजादवाद का मंत्र है 'जो दिखता है वही बिकता है। इस मंत्र को साहित्यकार भी अपनाने लगे है। सोशल मीडिया पर आज लेखकगण अपनी रचनाओं का जोर–शोर से प्रचार करता है।

## निष्कर्ष

वर्तमान में साहित्यिक लेखन में बदले मीडिया के प्रभाव ने पाठक वर्ग के सामने यह चुनौती पैदा कर दी है कि वह क्या पढ़े और क्या न पढ़े। साथ ही आज के मीडिया पर उपलब्ध जानकारी ज्ञात करने के लिए एक वेबसाईट पर जाने के बाद अनेको लिंक से जुड़ कर पाठक मूल विषय को तो भूल ही जाता है। आज जिस तरह इंटरनेट पर अभिव्यक्ति की खुली आजादी है उसमें हर कोई कुछ भी लिखकर शामिल होना चाहता है। साथ ही मीडिया ने कट, कॉपी, पेस्ट की प्रवृति को बढ़ावा दिया है। परंतु यह भी सत्य है कि वैश्वीकरण के कारण मीडिया के सहारे हिन्दी भाषा और साहित्य का बहुमुखी विकास हो रहा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी अपने सामर्थ्य को विश्व के समक्ष प्रमाणित कर रही है। आज मीडिया की भी भाषा बनकर हिन्दी ने जनभाशा का रूप धारण करके व्यापक जन स्वीकृति प्राप्त की है। और मीडिया के कारण हिन्दी भाषा का तेजी से सरलीकरण होने के कारण वैश्विक स्तर पर भी उसे स्वीकृति प्राप्त हो रही है।

## संदर्भ सूची

1. हिन्दी के अद्यतन अनुप्रयोग, डॉ0 माधव सोनटक्के, पृ0 60
2. साहित्य अमृत, दामोदर खडसे, 2013, पृ0 37
3. न्यू मीडिया में हिन्दी साहित्य की उभरती प्रवृतियाँ, शैलेश
4. न्यू मीडिया और हिन्दी साहित्यः वर्तमान स्थिति, अतुल वैभव
5. वैश्वीकरण की चुनौतियाः मीडिया और हिन्दी का संदर्भ, डॉ0 ऋषभदेव शर्मा
6. वैश्वीकरण और मीडिया, सुमित शर्मा